अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

वर्धमान महोत्सव: महातपस्वी ने मध्य दिवस पर चारित्र में वर्धमान बनने को किया उत्प्रेरित

-चारित्र की वर्धमानता और निर्मलता के लिए महाव्रतों के प्रति रहें जागरूक

-तिरुपुर तेरापंथ महिला मंडल का रजत जयंती वर्ष का हुआ आयोजन

-आचार्यश्री ने मंगल आशीष के साथ तत्त्वज्ञान आदि में आगे बढ़ने की दी प्रेरणा

02.02.2019 तिरुपुर (तमिलनाडु): होजरी, बुने वस्त्र, आरामदायक कपड़ों और खेल वस्त्रों के निर्माण के कारण भारत के एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थापित तमिलनाडु राज्य के तिरुपुर वर्तमान में मानों अध्यात्म के निर्यात का भी स्थल बना हुआ है। जी हां! वर्तमान में इस औद्योगिक नगरी में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी सैंकड़ों साधु-साध्वियों के साथ विराजमान हैं और अपनी अमृतवाणी से जन-जन के मानस को पावन बना रहे हैं। इस नगरी में उनके मंगल सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का एक विशिष्ट उत्सव 'वर्धमान महोत्सव' मनाया जा रहा है, जो जन-जन को भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप से भी निरंतर वर्धमान होने की मंगल प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

नगर के जे. एम. जैन बिल्डिंग के सामने बने वर्धमान महोत्सव के मध्य दिवस आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम साध्वीवृंद द्वारा वर्धमान महोत्सव के संदर्भ में गीत का संगान किया गया। तत्पश्चात् तेरापंथ धर्मसंघ के कीर्तिधर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृतवाणी से पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि चारित्रात्माओं सहित आम आदमी को भी अपने चारित्र के क्षेत्र में वर्धमान होने का प्रयास करना चाहिए। अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थिति में भी सम भाव रहना चारित्र होता है। साधु के तो महाव्रतों का स्वीकरण होता है, जिसमें तीन करण तीन योग सर्व सावद्य योगों का त्याग होता है, किन्तु कषाय साधु के योग में आता है तो वह सावद्य हो जाता है। बारहवें गुणस्थान से पहले साधु अथवा मनुष्य कषायों से मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए साधु को कषायों को अपने योग के साथ नहीं आने देना चाहिए। चारित्र की वर्धमानता के लिए चारित्र में कषायों के आने से रोकने का प्रयास करना चाहिए। साधु को गुस्सा करने से बचने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ को भी गुस्से से बचने का प्रयास करना चाहिए। चारित्र की वर्धमानता के लिए झूठ बोलने से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी चोरी न करे, प्रमाणिकता बनाए रखे तो चरित्र की वर्धमानता हो सकती है। आदमी शरीर, वाणी और मन को नियंत्रण में रखने का प्रयास करे तो चारित्र की दिशा में वर्धमान बन सकता है। साधु-साध्वियों के लिए प्रतिक्रमण बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। प्रतिक्रमण के दौरान साधु-साध्वियों को पूर्ण जागरूकता रखने का प्रयास करना चाहिए। कहीं कोई दोष लगे तो आलोयणा, प्रायश्चित कर अपने चारित्र को वर्धमान और निर्मल बनाने के लिए प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के पश्चात तेरापंथ युवक परिषद-तिरुपुर व कुन्नुर तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में तिरुपुर तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा रजत जयंती वर्ष मनाए जाने के संदर्भ कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्थानीय महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती अनीता बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। वहीं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया व स्थानीय पदाधिकारियों द्वारा रजत रत्न पंचविशिका का लोकार्पण श्रीचरणों में किया गया। तिरुपुर तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। आचार्यश्री ने स्थानीय महिला मण्डल को पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि महिलाओं को जितना संभव हो सके तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में सामायिक, धर्म-ध्यान आदि के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। खूब अच्छा होता रहे। अंत में महिला मण्डल द्वारा अनेक लोगों को स्मृति चिन्ह आदि देकर सम्मानित भी किया गया।

तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखाजी का 48वां चयन दिवस

आचार्यश्री ने दिया मंगल संदेश, मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याजी सहित अनेक साधु-साध्वियों ने अपनी प्रस्तुतियों व विचारों द्वारा महाश्रमणीजी को किया वर्धापित

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखा साध्वी कनकप्रभाजी के 48वें चयन दिवस के अवसर पर सूर्योदय के पश्चात आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। प्रवचन पंडाल में साध्वीप्रमुखाजी के पदार्पण पर आचार्यश्री स्वयं उनकी अगवानी में पधारे तो आचार्यश्री की इस कृपा को पाकर स्वयं महाश्रमणीजी सहित चतुर्विध धर्मसंघ आश्चर्यचकित और अहोभाव की अनुभूति कर रहा था। साधुवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद द्वारा गीतों के माध्यम से साध्वीप्रमुखाजी को वर्धापित किया गया। साध्वीवर्याजी व मुख्यमुनिश्री आदि संतों और साध्वियों ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने भी आचार्यश्री से आशीष प्राप्त करने की प्रार्थना की और साथ अपने मातृत्व भरे उद्बोधन से सभी को मंगल आशीष भी प्रदान किया। आचार्यश्री ने भी मंगल संदेश प्रदान किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के चयन दिवस सुअवसर पाकर तिरुपुरवासी हर्षविभोर थे।